JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत स्वामी रामदेव का शैक्षिक दर्शन

डा.राधा गुप्ता

शिक्षा संस्थान, बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, झांसी (उत्तर प्रदेश)

सारांश

भारत में शिक्षा का विकास धर्म के एक अंग के रुप में हुआ था और विशिष्ट धार्मिक व्यक्ति ही अपने आश्रमों में शिक्षा की व्यवस्था करते थे। उस काल में शिक्षा को एक धार्मिक कृत्य और पुण्य कार्य माना जाता था।सभी मठो में विद्यालयो की स्थापना की गयी थी और धर्म उपदेशक शिक्षा का कार्य करते थे परन्तु सभ्यता के विकास के साथ– साथ शिक्षा धर्म की परिधि से बाहर आती गयी। कारण यह रहा कि धर्म की कुछ सीमायें होती है परन्तु शिक्षा का विकास सीमा के बाहर ही संभव हो सकता है।

खोजशब्द- स्वामी रामदेव, शैक्षिक दर्शन

प्रस्तावना

प्राचीन काल में ज्ञान प्राप्ति को ही शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य कहा गया था। आगे चलकर व्यक्ति के विकास को शिक्षा के उद्देश्य के रुप में स्वीकार्य किया गया है। यह निष्चित हो जाने पर शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व सर्वागीण विकास करना है। यह भी विचार कर लेना आवश्यक होगा कि विकास किस प्रकार का होना चाहिए।

एक वर्ग व्यक्ति के वैयक्तिक गुणो के विकास को अधिक महत्व देता है। तो दूसरा वर्ग सामाजिक गुणो के विकास को सर्वोपरि मानता है। कुछ लोग शारीरिक विकास को अधिक महत्व देते है तो कुछ लोग मानसिक विकास को, शारीरिक विकास के पक्ष के लोग स्वास्थ्य व शक्ति को भौतिक सफलता का साधन मानते है। तो मानसिक विकास के पक्ष के लोग ज्ञान को ही शक्ति और सदगुण का माध्यम बताते है। परन्तु ये सभी एक दूसरे के विरोधी न होते हुये भी एकांगी है। वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य मानव व्यक्तित्व के सभी पक्षो यथा मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, भावात्मक आदि का अर्थात सर्वागिण विकास करना है। इस दृष्टि से शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व के सभी अंगो

का समान रुप से विकास होना चाहिए। इस देश शिक्षा परिर्वतन के लिये शैक्षिक विचारो की एक अजस्त्र धारा प्राचीनकाल से आज तक प्रावाहित होती दिखाई देती है। वर्तमान समय में स्वामी रामदेव जी का नाम महान शैक्षिक विचारको के अर्न्तगत प्रमुखता से लिया जाता है।

स्वामी रामदेव के अनुसार – इस संसार में चारों ओर अज्ञान फैला है। हमारे जीवन में दुःख है, दरद्रिता है, अषांति है, उसका एक ही कारण है अज्ञान। इसके कारण से अकर्मणता है, अशांति है। अज्ञान के कारण से चारो तरफ हिंसा है युद्ध है उन्माद है। सारा संसार अज्ञान के कारण से ही दुःखो में धधक रहा है। चाहे उसको हम युद्धो का उन्माद आतंकवाद कहे चाहे उसको भोगियों का उन्माद कहें चाहे महजबों का उन्माद कहें और इसी से आज सारे संसार में अशांति है। विश्व शांति के लिये और जीवन में संपूर्ण समाधान के लिये एक ही मार्ग है ज्ञान का। बाबा रामदेव जी भारत को एक महाशक्ति बनाने की दिशा में कार्य कर रहे है। उनका उद्देश्य भारतीयों के बीच में भारतीय संस्कृति सिद्धांतों और व्यवहारों का पर्नुः जीवत करना है। स्वदेशी शिक्षा व स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली इस मिषन के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से दो है।

शोध के उद्देश्य

किसी अनुसंधान की सार्थकता तब तक अधूरी रहती है जब तक की उस अनुसन्धान के उद्देश्य निर्धारित नही होते है। अतः अनुसंधान को सार्थक बनाने के लिये उसके उद्देश्य अवश्य निर्धारित किये जाने चाहिये।

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. इस शोध के उद्देश्य वर्तमान की शिक्षा समस्याओं का समाधान प्राचीन सम्बन्धों के आधार पर खोजने का आग्रह है।
2. स्वामी रामदेव जी के शैक्षिक विचारो का अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

किसी नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अतीत में मानव द्वारा एकत्रित किए गए ज्ञान का लाभ अवश्य मिलता है। अतः किसी भी अनुसन्धान को स्वतंत्र रूप देने के लिए अनुसन्धानकर्ता को उससे सम्बन्धित समस्याओं पर किए गए कार्य का सर्वेक्षण अवश्य करना चाहिए। शोधित ज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट के लिए एवं नवीन प्रभावपूर्ण शोध के सृजन हेतु सम्बन्धित साहित्य की जानकारी आवश्यक एवं अपरिहार्य है। सम्बन्धित शोध साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तको, ज्ञानकोषों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि के अध्ययन से है। जिससे शोधकर्ता को समस्या के चयन, परिकल्पना निर्माण तथा अध्ययन की रूपरेखा बनाने में सहायता मिलती है।

दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट हरिद्वार द्वारा प्रकाशित योग साधना पुस्तक में बाबा रामदेव जी द्वारा लिये जा रहे योग दर्शन, शैक्षिक समस्याओं के समाधान का समाकलन किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्वामी रामदेव जी के योग द्वारा मनुष्यों की समस्याओं का समाधान करना तथा विश्व योग दर्शन द्वारा विश्व बुंधता को प्राप्त करना है।

योग दर्शन – दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट हरिद्वार द्वारा प्रकाशित योग दर्शन में बाबा रामदेव जी ने बताया है कि किस प्रकार योग द्वारा विश्व प्रगति, शान्ति व समृद्धि के पथ सम्भता एवं संस्कृति का संरक्षण करते हुए आगे बढ़ सकता है।

स्वामी रामदेव जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

बाबा रामदेव का जन्म भारत के हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जिल के अलीपुर गांव में हुआ था। इनके पिता श्री यादव मां का नाम गुलाबो देवी था। इनके बचपन का नाम रामकृष्ण था। बचपन की प्रारम्भिक शिक्षा अर्थात् कक्षा 8बीं तक की औपचारिक शिक्षा उन्होंने स्कूल में प्राप्त की। उसके बाद उन्होंने विभिन्न गुरूकुल में भारतीय शास्त्र, योग और संस्कृत का अध्ययन किया। बाद में वे एक सन्यासी की तरह जीवन व्यत्तित करने लगे और हरियाणा के जिंद जिले के कलव गुरूकुल में रहने लगे वहां पर सभी उन्हें बाबा रामदेव के नाम से पहचानने लगे। बाद में वे हिमालय की गुफाओ में कुछ समय के लिए साधना में चले गये। कुछ वर्षों के पश्चात् वे वहां से वापस आ कर ग्रामीणों को निशुल्क योग प्रशिक्षण देने लगे तथा स्वयं भी तीव्र अनुशासन व ध्यान का अभ्यास किया।

शंकर देव जी के आशीर्वाद के साथ, वह अपने श्रद्धेय स्वामी आचार्य बालकृष्ण महाराज जी, जोकि एक महान आयुर्वेदिक चिकित्सक व महान विद्वान है, के साथ मिलकर कनखल हरिद्वार, उत्तरांचल, भारत में सन् 1955 में दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट की स्थापना की।

यही से बाबा जी ने इस ट्रस्ट के माध्यम से चिकित्सा, आध्यात्मिक और शैक्षिक गतिविधियों को प्रारम्भ किया और कई सेवा परियोजनाओं में मार्गदर्शन किया। बाबा जी ने योग को झंडे को परचम पर लहराते हुए कई लाख लोगो का इलाज करने लगे। यही से बाबा जी फिर भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियो एवं व्याप्त शासनो की अनितियो के संदर्भ में आवाज बुलंद की। उन्होंने कई मुद्दों जैसे कि उर्वरको एवं कीटनाषको के अति व्यापार व इनका किसानो द्वारा अनाधुंध प्रयोग। बाबा जी ने विदेशी सभ्यता व विदेशी कम्पनी के द्वारा बनाये जा रहे पेय व खाद्य सामग्री के विरूद्ध आवाज उठायी। उन्होंने पेप्सी व कोका कोला जैसे पेय पदार्थों की तुलना टॉयलेट क्लीनर के रूप में की।

बाबा जी ने देश के किसानों व समाज के पिछड़े वर्ग के लोगो दहनीय स्थिति के लिए भ्रष्ट शासन व प्रयाओ को दोषी माना है। उनका मानना है कि भारत की अर्थव्यवस्था में जहाँ कृषि का सबसे अधिक

योगदान है वहां आज भी किसान गरीबी स्तर के नीचे का जीवन जीने के लिए भी प्रयत्न करता पाया जा रहा है। उन्होंने देश की समृद्धि के लिए किसानो के लिए कल्याण कारी योजनाओ को बनाने व सही रूप से उनके क्रियान्वन को एक अहम मुद्दा बनाया।

बाबा जी ने **''भारत स्वाभिमान आंदोलन''** के द्वारा देष में व्याप्त भ्रष्ट्राचार उन्मूलन हेतु एक जन आंदोलन चलाया जिसको बड़े पैमाने पर लोगो का सहयोग प्राप्त हुआ है। यह बाबा जी का भारत राष्ट्र को महाशक्ति बनाने का प्रथम कदम है। वे भारत की संस्कृति, सिद्धांतो और व्यवहारो को पुनजीर्वित करने का प्रयास कर रहे है।

स्वामी रामदेव जी का शैक्षिक दर्शन

❖ **शिक्षा का तात्पर्य** : जब लोगों में आतंकवाद का डर हो नक्सलवाद समाज को डरा रहा हो ऐसे में आजाद देश की बात करना बेमानी नही तो और क्या है ? स्वतंत्रता पश्चात जिस स्वर्णिम भारत की कल्पना लोगों के मन में थी। वह धराशायी होती जा रही है। राजनीति में बैठे लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हुए हैं। घोटालों की खबरें अब हमें चौंकाती नही हैं क्योंकि हम ऐसी खबरें देखकर–देखकर निष्क्रिय हो चुके हैं, प्रतिक्रिया दें भी तो क्या ? सेना के अफसर हों या समाज के ठेकेदार हर कोई बस अपने बारे में सोच रहा है।

- एक तरफ भुखमरी से मरते बच्चे और दूसरी तरफ पिज्जा–बर्गर की पार्टी देने वाले बच्चे।
- टूटी टपकती छत और जर्जर दीवारों के बीच पढ़ने वाले बच्चे और दूसरी ओर ए0सी0 स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे।
- एक ओर शराब की पार्टियों में नोट उड़ाते अय्यास युवा तो दूसरी ओर नौकरी की तलाश व सिफारिश के अभाव में महीनों जूते घिसती युवा पीढ़ी।
- परिवार के पोषण की मजबूरी के कारण देह व्यवसाय को अपनाने वाली स्त्री और आगे बढ़ने व पैसे की बढ़ती लालसा को मिटाने के लिए अपने को नख से सिख तक कैश कराने वाली नारी कैसे इनको एक ही श्रेणी में रखें। ?
- एक ओर सर्वधर्म समभाव व अखण्ड भारत के नारे लगाते जननेता तो दूसरी तरफ दलीय राजनीति व अपना वोट बढ़ाने के लिए देश को धर्म व जातियों में विखण्डित करने वाले ये राष्ट्रनिर्माता।

ऐसे में हम आजाद भारत की कौन सी तस्वीर देखें। गर्व करें तो किस पर ? क्या आज हमें ऐसी नीति की आवश्कता है जो भारत की सम्पूर्ण आबादी को खुशहाल रखे, विकास तथा समृद्धि की ओर ले जाए न कि अमीर गरीब के बीच की खाई को बढ़ावा दे।

ऐसे में बाबा रामदेव जी का शैक्षिक दर्शन महत्वपूर्ण हो जाता है। बच्चों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करें जो तुम्हें स्वयं को मिले वातावरण से बेहतर हो।

किसी भी संस्था का रूप तस्वीर के ढ़ांचे जैसा होना चाहिए। ढ़ांचा ऐसा न हो कि तस्वीर के रूप को ही नष्ट कर दे। जिस तरह बिना ढ़ांचे के तस्वीर को सजाना मुश्किल है उसी तरह बिना संस्था के कोई भी बड़ा कार्य चाहे वह आध्यात्मिक हो या सामाजिक हो, करना मुश्किल है। शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो लोगों को आगे बढ़कर जिम्मेदारी लेने को प्रेरित करे।योग दर्शन में शिक्षा के सन्दर्भ में स्वतन्त्र रूप से कोई विचार नहीं किया गया है परन्तु उसकी तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा व नीतिमीमांसा से शिक्षा सम्बन्धी अनेक तथ्यों की जानकारी होती है। मनुष्य के अन्तःकरण का वेज्ञानिक विष्लेश्ण योग दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता है। योग के अनुसार मनुष्य प्रकृति, पुरूष एवं ईश्वर का योग है। उसका कहना है कि जब पुरूष प्रकृति की ओर आकृष्ट होता है तो वह प्रकृति के साथ सुख–दुःख भोगता है जब वह ईश्वर की ओर आकृष्ट होता है तो आनन्द स्वरूप का अनुभव करता है। योग के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य की आत्मा को प्रकृति तत्व की ओर से हटाकर चित्त–वृत्तियों का निरोध कर समाधि द्वारा ईश्वर तत्व की ओर आकृष्ट कराती है, उसे परमानन्दानुभूति कराती है।

❖ शिक्षा के उद्देश्य :

योग–दर्शन के अनुसार शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य अन्य भारतीय दर्शनों की तरह दुःख से मुक्ति तथा ईश्वर प्राप्ति है। जिसके लिए मानव को प्रयास करना पड़ता है। बाबा रामदेव जी ने महार्षि पतंजलि जी के आदर्शो व विचारो को अनुग्रहण करते हुए योग–दर्शन के अनुसार शिक्षा के निम्नलिरित उद्देश्य बतायें :–

- विश्व में व्याप्त दुःख से छुटकारा दिलाना
- विवेक ख्याति
- चित्तवृत्ति निरोध
- अपवर्ग की प्राप्ति
- अविद्या की समाप्ति
- विवेक ज्ञान
- शारीरिक विकास
- बौद्धिक विकास
- मानसिक विकास
- सामाजिक विकास
- नैतिक विकास

❖ **पाठ्यक्रम**

स्वामी जी इस बात से सहमत हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति प्रकृति–पुरूष के संयोग से होती है। योग दर्शन में योग विधि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मनुष्य प्रारम्भिक अवस्था में अपरिपक्व रहता इसलिये उनके अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम बच्चे या छात्र की अवस्था के अनुसार होना चाहिए। प्रत्येक अवस्था के लिए अलग–अलग पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जानी चाहिए –

शैशवावस्था : इस अवस्था में पठन सामग्री के अन्तर्गत मिट्टी, पानी, हवा, प्रकाश तथा खुला आकाश होना चाहिए। शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि से संबंधित पाठ्यक्रम होना चाहिए। शब्द से संबंधित सामग्री में विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न करने वाली वस्तुएं होनी चाहिए।

बाल्यावस्था : योग मनोविज्ञान आज का सबसे महत्वपूर्ण विषय है जो बालक के विकास के साथ उनकी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम का विवेचन मनोवैज्ञानिक ढंग से करता है। इस अवस्था में बालक का शारीरिक विकास तथा ऐन्द्रिक विकास तो होता ही रहता है, उनका मानसिक विकास भी तीव्र गति से प्रारम्भ हो जाता है। ध्यान–प्रकरण की व्यवस्था। प्राणायाम की समुचित व्यवस्था। भाषा, गणित, सामाजिक विषय, विज्ञान, नैतिक शास्त्र, इतिहास, योगासन आदि महत्वपूर्ण विषय रखे जाने चाहिए।

किशोरावस्था : इस आयु में ''स्वप्रत्यय'' स्थायी होने लगता है तथा विनिश्चयकारी बुद्धि जागृत हो जाती है। इस आयु के पाठ्यक्रम में विवेचनात्मक विषयों का प्रावधान होना चाहिए। बाल्यावस्था में तर्कशून्य तथ्यात्मक ज्ञान प्राप्त किया जाता है क्योंकि बुद्धि का विकास नहीं हो पाता है, परन्तु किशोरावस्था में उन्हीं विषयों को विवेचनात्मक एवं तर्क सम्मत बनाया जा सकता है। इस आयु में छात्र प्रदत्त ज्ञान को ज्यों का त्यों नहीं ग्रहण करता है अपितु उसके सम्बंध में निर्णय भी लेने की क्षमता रखता है। इस आयु में छात्र की अवधारणाएं स्थिर होने लगती हैं, मौलिकता का अविर्भाव होने लगता है तथा वह अपना दृष्टिकोण बनाने में समर्थ होने लगता है।

❖ **शिक्षण विधिया.:**

प्रत्यक्ष विधि, अनुमान विधि, शब्द विधि, योग विधि, ध्यान विधि, अभ्यास विधि

❖ **अनुशासन :**

स्वामी रामदेव जी अनुसार विवेक ज्ञान ही मुक्ति का साधन है। विवेक ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है और वह अनुशासन ही योग दर्शन का विषय है। योग दर्शन का प्रारम्भ अनुशासन से ही हुआ है क्योंकि बिना अनुशासन के किसी भी कार्य को नहीं किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

- स्वामी रामदेव जी के शैक्षिक विचार समतामूलक एवं मानवीय आदर्शों पर आधारित है।
- शिक्षा के क्षेत्र में समानता की भावना, सत्य, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता की भावना को विकसित किया जा सकता है।
- शिक्षा में स्वअनुशासन व स्वप्रेरणा की विचारधारा निरपेक्षवादिता का सिद्धान्त अपनाया जाना चाहिए।
- महात्वाकांक्षा को त्यागकर प्रेम की महत्ता को स्वीकार करें।
- शिक्षा के माध्यम से सभ्यताओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता पैदा करना।

शोध के निष्कर्ष

- शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य विकास की प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास एवं बुद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन होता है। इसके द्वारा व्यक्ति को सभ्य एवं सुसंस्कृत नागरिक बनाया जा सकता है।
- प्रारम्भ से ही मानव मस्तिष्क में शिक्षा के शाश्वत मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति प्रश्न उभरते रहे हैं। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में कौन सी विधि होनी चाहिए ? इन प्रश्नों पर प्राचीन काल से लेकर आज तक दार्शनिक विचारकों एवं शिक्षाविदों में मतभेद है।
- आज के वैज्ञानिक युग में व्यक्ति स्वयं में इतना परेशान है कि दूसरों के बारे में विचार करने का उसके पास समय नही है। आज की सामाजिक संरचना इतनी जटिल हो गई है कि लोग एक दूसरे की चिन्ता करने के बजाय अपनी ही चिन्ता में सीमित हो गए हैं। समस्त मानवता स्वकेन्द्रित हो गई है।
- हमारे समाज में बच्चों की शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास का उच्चदायित्व अभिभावक, शिक्षक एवं समाज आदि का है। लेकिन कोई भी अपनी भूमिका एवं अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करने को तैयार नही है। चारो ओर अराजकता एवं भ्रष्टाचार का बोलबाला है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि अभिभावक, शिक्षक एवं समाज सभी को मिलकर एक स्वस्थ्य एवं आदर्श समाज का निर्माण करने के लिए आगे आना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चौबे, सरयू प्रसाद एवं चौबे अखिलेश, (2008), 'आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त', इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
- सिंह, ए0के0, (2009), 'शिक्षा मनोविज्ञान', पटना, भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)।
- चटर्जी एवं दत्त (1998), 'भारतीय दर्शन, पटना पुस्तक भण्डार।
- राय, पी0एन0 (2003), 'अनुसन्धान परिचय,' मेरठ आर0एल0 बुक डिपो।
- तीर्थ, सोमानन्द स्वामी, ''पातंज्जलयोगप्रदीप'' गोरखपुर : गीता प्रेस 2001।
- उपाध्याय, रामप्रीत, ''योग क्या है ?'' कलकत्त : अद्वैत आश्रम, 5 डिही एण्टाली रोड।
- श्री सत्यानन्द, ''योगसूत्र'' विदिशा : श्री कल्पना ऑफसेट।
- स्वामी, स्वयमानन्द, ''योग के अद्भुत चमत्कार'', मथुरा : हिन्दी सेवा सदन, 1998।
- न्यूज इण्डिया टूडे, 16.4.2014
- आचार्य बालकृष्ण, ''योग संदेश'' उत्तराखण्ड एम0पी0 प्रिंटर्स, बी–220, फेज–2, नोएडा 2009
- स्वामी रामदेव, ''योग साधना'' उत्तराखण्ड, दिव्य प्रकाशन, कुणालबाबा आश्रम, कनखल 2004